अरुटपेरुञ्जोति अरुटपेरुञ्जोति तनिप्पेरुङ्करुणै अरुटपेरुञ्जोति

तिरु अरुट प्रकाश

वल्ललार

सत्तिय ज्ञन सबै
जोति दर्शन

ज्ञन सभा
दिव्य दरवाजा

ज्ञन सभा दिव्य
दरवाजा खोलना

कृष्णवर्ण का
आवरण
माया शक्ति

नीलवर्ण का
आवरण
क्रिया शक्ति

हरितवर्ण का
आवरण
परा शक्ति

रकिमं वर्ण
आवरण
इच्छा शक्ति

पीतवर्ण का
आवरण
ज्ञर शक्ति

श्वेतवर्ण का
आवरण
आदि शक्ति

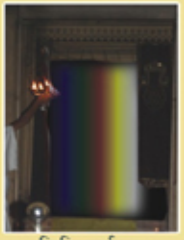

मिश्रितवर्ण का
आवरण
चित् शक्ति

सात परदे निकालने के बाद ज्योति दर्शन

हमारे आत्म पीठ में स्थित अरुटपेरुञ्जोति आण्डवर (कृपाबडिज्योति भगवान) आत्म प्रकाश के अंदर अरुल रोशनी के रूप में दिखाई पटते है। जैसे आत्म प्रकाश रोशनी को सात माया शक्तियाँ परदे (आवरण) छिपाते है। वो सात परदे को निकाले तो हमारे आत्म प्रकाश और उसके अदंर स्थित हुए अरुट प्रकाश के कृपाबडीज्योति भगवान को देख सकते है।

ज्योति दर्शन हमेशा पुष्य नक्षत्र में होगा।

सात आवरण हटाने के बाद
ज्योति दर्शन

सत्य ज्ञान सभा में ज्योति दर्शन

तिरु अरुट प्रकाश

वल्ललार

(चरित्र संक्षिप्त)

मृत्यु न होने के श्रेष्ठ उदाहरण

संस्करण : प्रथम, 2016

मुद्रण : 1000

मूल्य : पढ़ने के बाद दूसरों को भी बताइये

प्रकाशक : तेय्वीग मामरत्तडि,
तण्णीप्पन्दल, मेट्टुक्कुप्पम – 607 802
वडलूर (समीप),
कडलूर जिला, तमिलनाडु

मोबैल : 09994563197, 09941249316

ईमेल : dhayamoolam@gmail.com

वेबसाईट : www.vallalarspace.com

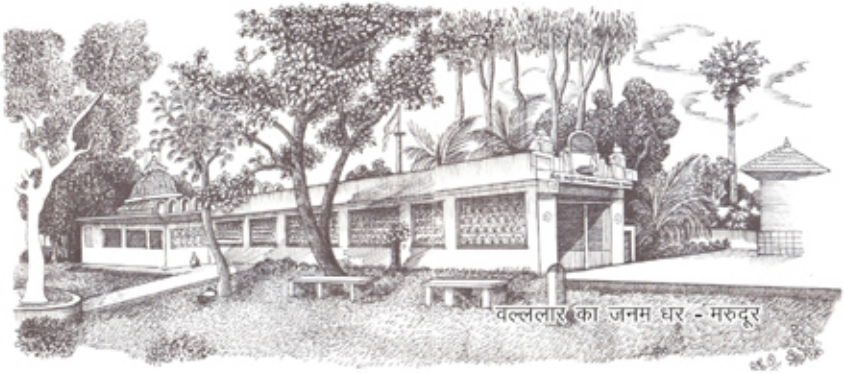

तिरु अरुट प्रकाश
वल्ललार

दक्षिण भारत के तमिलनाडू के कडलूर जिला चितम्बरम के पास मरूदूर नाम का एक छोटा सा गाँव है। वहाँ इरामैया और चिन्नम्मै दम्पत्ति हुए। इरामैया गाँव के मुनिम (मुंशी) और अध्यापक भी थे। इनको सभापति और परसुराम नामक दो पुत्र व उन्णामुलै और सुन्दरम्माल नामक दो पुत्रियाँ थीं।

वर्ष 1823, अक्टूबर महीने में 5 तारिख रविवार शाम 5:30 बजे पाँचवाँ बच्चे का जन्म हुआ जिसका नाम 'इरामलिंग' रखा गया।

सिदम्बरम का दर्शन

इरामलिंगम पाँच महीने के समय में सिदम्बरम जाकर उनके माँ बाप प्रार्थना किये। मन्दिर से **'सिर्सभै''** में नटराज परमात्मा को प्रार्थना करने के बाद सब लोग **'सिदम्बर रहस्य'** दर्शन के लिये उसके सामने आकर खड़े हो गये। पिताजी के हाथ में बच्चा इरामलिंगम थे। पन्डित ने परदा को निकाले तो

'सिदम्बर रहस्य' दिखाई दिया। सब लोग दर्शन किये। बच्चा इरामलिंगम भी दर्शन किये। जो दर्शन सब लोगों का रहस्यमयी था, वह पाँच महीने प्राय का इरामलिंगम बच्चा को **'आकाश रूप'** जैसे मालूम हुआ। खुदा ने रहस्य को अच्छी तरह दिखाकर आशिर्वाद दिया। 'सिदम्बर रहस्य' देखकर बच्चा खिलखिलाकर हंसने लगा। इसे देखकर पुजारी ने कहा कि इरामैया यह बच्चा आपका नही। यह खुदा का बच्चा है। इसका ज्ञान दुनिया भर में फैलेगा और अपने घर में ठहरने को स्थान भी दिया। दूसरे दिन उनको आदर करके भेजा।

परिवार चेन्नै को जाना

जब इरामलिंगम छः महीने के थे तब उनके पिता के देहातं हुए। उसके बाद माता सिन्नम्मै ने बच्चों के साथ अपनी माँ के गाँव चली गई। कुछ काल के बाद सब लोग चेन्नै को चले गये। बड़ा बच्चा सभापति ने कान्जीपुरम विद्वान सभापति के पास विद्या सीखने लगा। फिर उन्हें इतिहास, पुराण, में अच्छे पण्डित बनकर अपने परिवार को चलाता था।

ज्ञान सब कुछ मालूम होना

जब बच्चा इरामलिंगम को शिक्षा सिखाने का उम्र हुआ था, उनका भाई सभापति खुद सबक सीखने लगा। बाद में उनका अध्यापक कांजीपुरम महा विद्वान सभापति के पास ही सीखने के लिये भेजा। छोटा इरामलिंगम का बुद्धि पक्का और उनका कवि के साथ कन्द कोट्टम प्रार्थना, यह सब देखकर उन्हें बिना कोई सिखाने और बताये हुए महाज्ञानी करके विद्वान सभापति को

मालूम हो गया और तभी सिखाना भी बन्द कर दिया। इरामलिंगम ने कोई भी पाठशाला में पढ़ा नहीं। किसी भी अध्यापक से सीखा नहीं। सब कुछ भगवान ने ही सिखाया। भाई ने इरामलिंगम को कोई भी पाठशाला में भर्ती नहीं किया। भगवान खुद ही सब कुछ दे दिया।

ज्ञान कविताएँ बनाना

गलियों में खेलने का समय में ही इरामलिंगम ने ज्ञान विशय में ही कवियाँ बनाकर गाता था। गाने का नियति कुछ भी मालूम नहीं था। फिर भी एक एक को माला जैसा गाने का सूक्ष्म को मालूम कर लिया था।

बचपन का भाषण

भाई के भाषण देते सोमू के घर में हर दिन जो प्रसंग होगा, वह एक दिन भाई का बिमारी के कारण रूखावट हुआ था। इसलिए अपना भाई इरामलिंगम को बुलाकर सोमु के घर जाकर बिमारी का खबर बताकर एक दो गाने गाकर प्रार्थना खत्म करके आने के लिये भेजा था उसी तरह इरामलिंगम भी सोमु के घर जाकर गाना गाकर भाषण किये। सभा में जो थे वे लोग हर दिन इरामलिंगम को ही आकर भाषण करने को बोला। इरामलिंगम भी तिरूज्ञान सम्बन्दर का पुराण से रात बहुत देर तक भाषण दिया। तो सब लोग इन्हीं का प्रसंग को पसंद किये। इसे जानकर भाई बहुत प्रसन्न हुए।

तिरूवोट्रियूर वडिवुडैय नायकी उनको खाना दिया

एक दिन इरामलिंगर तिरूवोट्रियूर मंदिर जाकर देर से आए उन्होंने अपनी दीदी को न जगाकर चबुतरा (बैठक) में सो गए। उस समय देवी वडिवुडैय नायकी दीदी के रूप में आकर इरामलिंगर को खाना दी। फिर उनकी दीदी खाने को बुलाते समय "थोड़ी देर पहले आप ही मुझे खाना दी, पत्ते को दिखाते हुए कहा"।

पहला छात्र

1849वाँ वर्श में तोलुवूर वेलायुदनार इरामलिंग अडिगलार के पास आकर विद्यार्थी बना। तब अडिगलार का उम्र 26 और वेलायुदनार का उम्र 17 था। इरामलिंगम अडिगलार का वल्लभ में बिना इच्छा वेलायुदनार खुद 100 कविताओं को कठिन शब्द के साथ बनाकर अडिगलार के पास देकर ये सब बहुत पुराने काल का कविताएँ है। तब अडिगलार ने उसको देखकर ये कविताएँ संग काल (पुराने काल) का नहीं। अगर ये सब संग काल को होता तो इतना गल्तियाँ नहीं रहेगा। इस कविताओं को कोई अज्ञान आदमी लिखा हुआ मालूम पढ़ता है। वह जरूर अभी सीखने वाला होना चाहिए इसको सुनकर वेलायुदनार ने अपना गल्ती को मालूम होकर माफ मांगकर अड़िगल के छात्र बन गये।

संपादक और ग्रन्थाध्यापक

चेन्नै में रहते समय महान रामलिंगर 1851 में ओलिविल ओडुक्कम 1856 में तोण्डैमण्डल सदगम, 1857 में चिन्मय दीपिकै आदि ग्रंथ छपवाए थे।

मनु मुरैकण्ड वासगम, जीवकारूण्य ओलुक्कम आदि गद्य साहित्य की रचना की।

निर्वाण साधु को सुधरना

तिरूबोट्रियूर रथ मार्ग पर एक साधु ने आने जाने वाले लोगों को जानवरों के साथ संबंध करके अपमान किया। एक दिन रामलिंगर उसी रास्ते पर आए तब एक उत्तम मनुश्य जाते है कहकर शर्मिंदा होकर सिर नीचा किया। इरामलिंगर ने अपनी ओढ़नी को देकर उपदेश दिया। इसके बाद वह साधु वहाँ से चले गये।

चोर को जीवन देना

जब तिरूवोट्रियूर चनूंतरे में इरामलिंगर लेटे थे। तब एक चोर ने उनके एक कान का लौंग ले लिया दूसरे लौंग को लेने के लिये दूसरे कान को भी दिखाया। फिर इरामलिंगर ने कहा कि उसे अच्छे दाम में बेचकर कोई धंधा करके सुखमयी जीवन बिताओ। इस प्रकार चोर को भी दया दिखाये।

चेन्नै को छोड़ना

बहुत बड़ी भीड़ का आवाज के साथ चेन्नै में रहना और अपना परिवार के साथ घर में रहने के लिये भी इच्छा नहीं था। इसलिए अपना 35 उम्र में (1857) एक दिन चेन्नै छोड़कर यात्रा स्थलों को दर्शन करके आखिर ''तिल्लै'' (सिदम्बरम) पहुँचे।

करुंकुली में ठहरना (1857–1867 इ)

इरामलिंगर करूंकुली ग्राम मुन्सिप वेन्गडर को तिल्लै में देखकर इरामलिंगर को अपने गांव में आने के लिये बोले तो इरामलिंगर ने करूंकुली आ पहूँचे। वेन्गडर ने अपने घर में ही इरामलिंगर को ठीरने को प्राथना किया। यह मालूम होकर इरामलिंगर भी उनके घर में ही ठहर गये। 1858–1867 तक वे करूंकुली में ही थे।

पानी से दीप जलाना

दीया न जलाने वाले घर में रहना ठीक नहीं यह महान इरामलिंगर का विचार था। इसलिये उनके कमरे में सदा दीप जला रहता था उन्होंने एक ही घण्टे सोते थे। इरामलिंगर ध्यान ईश्वर के भजन और कविता लिखने में डूब गये।

वेन्गडर की पत्नी मुत्यालम्मै ने हमेशा एक बरतन में तेल और दूसरे में पानी भरकर रखती थी। मुत्यालम्मै एक दिन शादी को जाने की जल्दी तेल रखने को भूल गयी। इरामलिंगर पानी को तेल समझकर दीप जलाकर कविताएं लिखने लगे। अपनी गलती को समझकर पति के साथ प्रातः काल घर वापिस आई। यहां पानी से दीया जलने को देखकर दोनो अचरज में पड गए।

समरस सन्मार्ग संगम (1865)

1865 में इरामलिंग अडिगलार समरस शुद्ध सनमार्ग सत्य संग की स्थापना करके एक ठीक रास्ता पर लोगों के लाने में प्रयत्न किये।

समरस शुदध सनमार्ग के नियम

1) भगवान एक ही है। उसको ज्योति स्वरूप में प्रार्थना करना चाहिए।
2) देवताओं के नाम पर बलि नहीं चढ़ाना चाहिए।
3) माँस आहार को न खाना चाहिए।
4) जाति, धर्म, सम्प्रदाय आदि के किसी भेद को स्वीकार नहीं करना चाहिए।
5) कोई भी जीव हो वह अपना जीव समझना।
6) दिल में जीवकारूण्य (दया भाव) हर एक को रहना आवश्यक है।
7) गरीबों को, भूखों को खाना देना जरूरी है।
8) मरने के बाद शव को जलाना नहीं। मिट्टी के अन्दर समाधि कर देना है।
9) उसके बाद जो क्रियायें (तिति वगैरह) है उसे करने की आवश्यक नहीं।
10) इन्द्रिय, करण, जीव, आत्म संयम सत्य मार्ग पर मनुष्य को ले जाएँगे।

ये सब बातें ''समरस शुद्ध सन्मार्ग सत्तिय संगम'' के नियम है।

कलपट्टूजी को दर्शन

तिरुनरुंकुन्ट्रम नामक गाँव के ऐक पहाड़ी पर एक झोंपडी में कलपट्टूजी नामक तपस्वी जीवन बिताते थे। एक दिन में एक ही बार गाँव

के लोगों के घर में अपने हाथ से तीन मुट्ठी भात को खाकर अपनी झोंपडी वापस गए। उनके स्वप्न में वल्ललार दर्शन दी। उसके अनुसार उचित दिन में उनकी झोंपडी में आकर दशन दिए। वडलूर धर्मशाला की **सभी कार्य उनको सौंपा।**

कलपट्टूजी और वल्ललार दोनो बैल गाडी में यात्रा करते समय कलपट्टूजी के गोद में वल्ललार लेटे थे। तब उनको अपने सुध न थी। फिर देखे तो कलपट्टूजी के धोती पूरा आँख के आँसू से बीग गया उसी समय उन्होंने वल्ललार से बात पूछा तब वल्ललार ने कहा कि इस दुनियावालों के बारे में ही मेरा विचार है।

तिरू अरूटपा ग्रंथ

इरामलिंगम अपने कविताओं को इरूक्कम रत्नम और वेलायुदनार और अन्य भक्त जनों की कोशिश से उस गीत को **''तिरू अरूट्पा''** नाम रखकर (1867) प्रकाशित की। 1867 में चार ग्रंथ 1880 में पांचवी ग्रंथ, 1885 में छपवाकर प्रकाशित की।

इरामलिंगम पहले चार ग्रंथ प्रकाशित करते समय पहले पन्ने में **''तिरू अरुट प्रकाश वल्ललार''** नामक चितंबरम इरामलिंगम गाने ग्रंथ तिरूवरूट्पा उसी तरह छपवाते समय से उनका नाम तिरूवरुट प्रकाश वल्ललार नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सत्य धर्मशाला, वडलूर

सत्य धर्मशाला की स्थापना (23.5.1867)

महान वल्ललार के उद्देश्य में मुख्य शब्द "जीवकारुण्यम" अर्थात सभी जीव से दया दिखाना। महान वल्ललार दीन दुखियों की भूख मिटाने के लिए वडलूर में सत्य धमशाला की (23.5.1867) प्रभव, (ज्येष्ठ)वैकासि 11 तारिख,गुरुवार में स्थापना की। धर्मशाला को अपने निवास स्थान बनाकर चार साल तक वहाँ रहकर कविता लिखना, उपदेश देना और कई अद्भुत कार्य को संभालते थे।

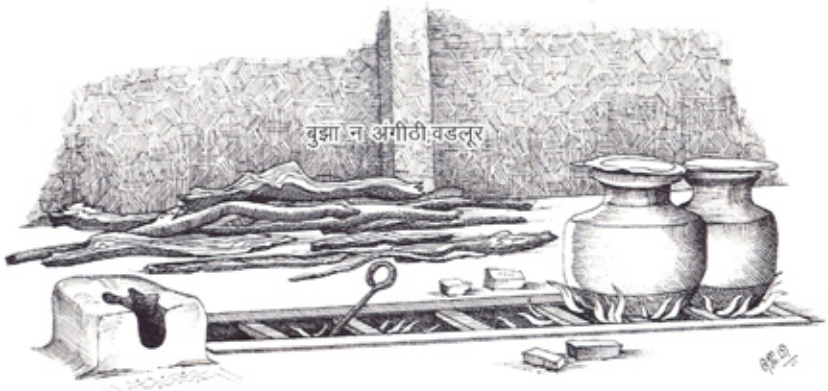

बुझा न अगीठी,वडलूर

चोर को माफ करना

एक दिन वल्ललार को अदालत के चौकीदार के साथ बैल गाड़ी में जाते समय रात हो गई। तब कुछ चोर चौकीदार से अंगूठी मांगकर उसे लाठी से मारने के लिए उठा तब चोर के हाथ में बहुत दर्द हुआ। फिर उसने वल्ललार से प्रर्थना कर सच्चा जीवन बिताने की प्रतिज्ञा भी दी।

कीमियागर का आश्चर्य

कीमियागरों (प्राचीनकालिक रसायनशास्त्र का ज्ञाता)में एक वल्ललार के पास उस कनीज पदार्थों बदलने के बारे में बड़े गर्व से कहा। तब वल्ललार ने एक मुट्ठी भर मिट्टी लेकर उसे सोने का टुकड़ा बनाकर दिखाया और कहा कि जीवन से विरक्त होने वाले को मात्र यह कार्य संभव है। इसे सुनकर कीमियागर बहुत लज्जित हुए।

वल्ललार के अद्भुत घटनाएँ

एक रात वडलूर की घर्मशाला में सीमित मात्रा में भोजन बन चुका था। अचानक लगभग एक सौ अतिथि भोजन के समय आ पहुँचे। भोजन की व्यवस्था के संरक्षक षण्मुगम ने वल्ललार को सूचित किया

कि भोजन किसी भी प्रकार इतने लोगों के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। वल्ललार तुरन्त उठे, सभी अतिथियों को पंक्तिबद्ध बिठाकर स्वयं भोजन परोसा। सबने भरपेट खाये फिर भी पर्याप्त मात्रा में भोजन शेष बच गया।

रूप

कुछ शिष्यों द्वारा मासिलामणि नामक प्रसिद्ध फोटोग्राफर को मद्रास से बुलाया गया। उसने आठ बार प्रयास किए पर किसी भी 'नेगेटिव' में वल्ललार का चित्र नहीं आया। हर बार उनका पहना श्वेत वस्त्र ही अंकित हुआ। उनमें आस्था रखने वाले मानते हैं कि उनका शरीर ज्योतिरूप हो गया था जिसमें दैवी प्रकाश विद्यमान था।

रूप दर्शन भगवान को पसंद नहीं

एक दिन बणरुट्टि गॉव का एक कुम्हार वल्ललार की मिट्टि की एक मूर्ति बनाकर लाया। 'स्वर्णिम देह अब मिट्टी की हो गई है'—ऐसा कहकर उन्होंने उस मूर्ति को हाथ से गिरा दिंया,वह टुकडे– टुकडे हो गई। इससे हम जानते है कि वल्ललार रूप दर्शन में विश्वास नहीं रखे।

बहु भाषाज्ञा विद्वान

धर्मशाला में एक बार भक्तों को धर्मोपदेश देते समय वल्ललार ने कहा कि हमको सबक सिखाने के लिए एक व्यक्ति आ रहे हैं। उस विद्वान ने गर्व से कहा कि मैं पाँच भाषा जानने वाले महापण्डित है।

वल्ललार ने एक लड़का को पास बुलाकर कहा कि यह बालक छः भाषाएँ जाननेवाला ज्ञानी था। आपका कोई संदेह हो तो उससे पूछिए। इसे सुनकर वह पंडित धक्का होकर चुपचाप बैठा था।

वल्ललार ने बताया

1) हिंसा का एक जघन्य रूप देवी–देवताओं के समक्ष पशुबलि है।

पशु–हत्या प्रकृति–विनाश का ही एक रूप है।

2) जीवों को बली चढाकर दूसरों को पालन पोषण करना जीवकारुण्य आचरण नहीं। यह प्रकृति का विरोध है।

3) हमारे शरीर में जैसे नाखून, बाल हटाने से कोई हानी नहीं होती उसी प्रकार प्रकृति से मिलनेवाले फल, फूल पत्ता आदि खाने से कोई हानी नहीं होते है ।

4) पवित्र तीर्थस्थलों की यात्रा, पवित्र जल में स्नान, ईश्वर के विविध रूपो के मंदिरों आदि में दर्शन, प्रार्थना, पूजा, मंत्र–जप सब 'जीव–कारुण्य' (दया भाव) के बिना वृथा है।

5) ज्ञान, योग, तप, साधना, मंत्रोच्चार, समाधि आदि के द्वारा परमतत्त्व की कृपा तब तक प्राप्त नहीं होगी जब तक 'जीव–कारुण्य'(दया भाव) का मार्ग ग्रहण नहीं किया जाएगा।

तीनशुवै नीरोडै (मीठा नाला)

मेट्टुक्कुप्पम नामक पुण्य भूमि के पूरब भाग में पेड पौधे वृक्ष धेर कर उनके बीच अधिक दिनों से पंक नाला बह रहाया। उस नाले में आमलोग तथा विपूयमान लोग और भी अन्य लोग स्नान करना आदत है। उस प्रकार स्नान करते समय नाला सुख गया। स्त्रोत मे पानी व था।

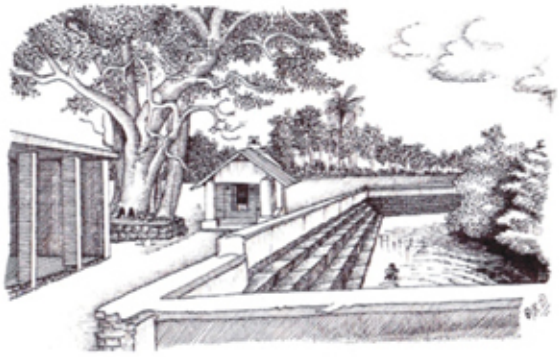

इसे समझकर वल्ललार वहाँ शाकर अपने दाये हाथ से उसे नाले को छोढा। अगले क्षण, सुध्द नीर नाले मे पानी बहने लगा। आज उस नाले मे पानी सुखता नहीं।

सूर्य–उपासक का परिचय

एक बार दो सूर्य–उपासक ब्राह्मण विशाखपट्टिनम से वडलूर आए। उन्होंने वल्ललार को अपनी साधना का परिचय देते हुए स्पष्ट किया कि वे शास्त्र–विधि के अनुसार साधना करने पर भी अपर मार्ग–सिद्धि (लौह, चाँदी, स्वर्ण को हाथ में लेकर पिघला देना) तथा पर मार्ग–सिद्धि (आकाश में विचरण करने की योग्यता) प्राप्त करने में असमर्य रहे हैं। वल्ललार ने चाँदी का एक रुपया हाथ में लिया और कुछ समय उसे मुट्ठी में बंद कर लिया। वह सिक्का तरल चाँदी बन कर हाथ से बह गया। इसके उपरान्त उन ब्राह्मणों को अनन्त कृपालु परमसत्य की प्राप्ति के महत्त्व का संदेश दिया तथा लौकिक सिद्धियों की अनावश्यकता का संकेत किया–ऐसा अनुमान है।

सिद्धि वलागम – 1870

कुछ दिनों में भीड़ ज्यादा होने के कारण वल्ललार शान्ति के वास्ते वडलूर का दक्षिण में दो मील दूर पर मेटटुक्कुप्पम गाँव में एक झोपडी मे जाकर ठहर गये। उस जगह का नाम था "**सिद्धि वलागम**"। सिद्धि मिल्ने का जगह है। 1870 से 1874 में सिद्धि लेने तक वल्ललार इधर ही थे। इसी कमरे के अन्दर वल्ललार को सिद्धि मिला।

सत्तिय ज्ञान सबै 25–01–1872

ज्योति प्रार्थना के वास्ते वडलूर में ''सत्य ज्ञान सभै'' को बनाया। 25–01–1872 प्रसोपत्ति वर्ष (माघ)तै तमिल महिने, 13 तारिख (पुष्य नक्त्र) में पहला प्रार्थना सभै में हुआ था। सब लोग ''अरूट्पेरूञ्जोति'' को देखकर आनन्द हुए। अपने ही अन्दर जो देखने का अनुभव को बाहर भावना से दिखाना ''सत्तियज्ञानसबै''। सात आवरण का तत्व अरूटपेरूञ्जोति का

साम्ने होकर हम को ज्योति दिखाई नहीं देता। अज्ञान जाने से ही हम को अरूटपेरूञ्जोति का दर्शन मिलेगा।

यदि आप मुझसे पूछो कि इस भौतिक शरीर में **'मैं' कौन हूँ , तो उत्तर होगा मैं आत्मा हूँ , मैं अणु रूप हूँ। इस अणुरूप आत्मा में कोटि सूर्यों का प्रकाश है। इसका आवास त्रिकुटी है। इसका वर्ण एक चौथाई स्वर्णिम और तीन चौथाई श्वेत है। आत्मा के इस प्रकाश के अवरोध के लिए सात माया–शक्ति हैं : माया (कृष्ण वर्ण), क्रया (नील वर्ण), परा (हरित वर्ण), इचछा (लाल वर्ण), ज्ञान (स्वर्ण वर्ण), आदि (श्वेत वर्ण), तथा चित् शक्ति (जिसका वर्ण विविध रंगों के मिश्रण) है।**

समरस शुद्ध सन्मार्ग में, पूजा व्यवस्था में अथवा किसी भी रूप में जाति, सम्प्रदाय, वर्ण, धर्म आदि का कोई भेदभाव नहीं। मांस–भक्षण का स्पष्ट विरोध है। मांसाहारी मनुष्यों को सभा के भीतर जाना मना है परन्तु वे बाहर से प्रार्थना कर सकते हैं। पूजा–विधान में अपने अंतःकरण में स्मरण या प्रभु के गुणगान को प्रमुखता दी गई बाह्य तत्त्व यथा पुष्प, फल, अक्षत, नारियल, अगरबत्ती, धूप,पवित्र–जल, विभूति, संगीत आदि की अनुमति नहीं है। 'जीव–कारुण्य' और 'अनन्त कृपाज्योति' का यह मार्ग एक सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक आंदोलन के रूप में उभरा और विकसित हुआ।

सन्मार्ग कोडि (झण्डा) 21–10–1873

पुराने जमाने में ज्ञानि लोग कोई अपने मार्ग का झण्डा (अलग से) प्रयोग नहीं करते थे। मगर वल्ललार ने एक झण्डा तैयार किया। इसका नाम ''सन्मार्ग झंडा'' है। झंडा पीला रंग और सफेद रंग का होता है।

21–10–1873 मेट्टुक्कुप्पम सिद्धि वलागम में श्री मुग वर्ष, ऐप्पसि (तमिल महीने) 7वाँ तारिख मंगलवार सुबह 8 बजे पहला पहला झण्डा बाँदकर बहुत बड़ा भाषण दिये। वल्ललार का आखिरी भाषण को 'महोपदेश'' कहते हैं।

सिद्धि हुआ था (30–01–1874)

सन्मार्ग का आखिर आदमी मरना नहीं। आत्मबल पाकर मरण न होनेवाले बडे उत्साह पूर्ण जीवन पाकर हमेशा रहना ही सन्मार्गी है। यह वल्ललार का उपदेश है। वल्ललार शुद्ध, प्रणव और ज्ञान देहों को अरूटपेरूञ्जोति खुदा सेले लिया। जो तीनों देह सिद्धियाँ को लेते हैं उनकी छाया जमीन पर नहीं गिरेगी। वे खुदा के साथ ही जायेंगे। उन लोगों का दुसरा जन्म नहीं होगा। यह

जन्म ही आखिरी जन्म होगा। यही नित्य देह होगा। नित्य देह को लेकर एक ''तैपूसम दिन'' में श्री मुग वर्श, तै (तमिल महीना), 19वाँ तारिख 30–01–1874 शुक्रवार पुष्य नक्षत्र पूर्णिमा के दिन रात 12 बजे (15 घडि) सिद्धि वलाग तिरू मालिगै में अपने कमरे के अन्दर जाकर दरवाजे को बन्द करके 2 1/2 घडि में अरूटपेरूञ्जोति खुदा वल्ललार के साथ मिलकर एक हो गये।

वल्ललार के उपदेश
तत्व – नीति

हमारे प्रथम पुरूशार्थ चार हैं –

1. एम सिद्धि
2. अमरविद्या
3. तत्व निग्रह करना
4. ईश्वरावस्था जानकर ईश्वरमय होना

इन्हें पाने के नियम चार हैं –

1. इन्द्रिय संयम
2. करण संयम
3. जीव संयम
4. आत्म संयम

इन्द्रिय संयम

1) कठोर वचन न सुनकर, ईश्वर स्तुतियों को सुनना।
2) अशुद्ध स्पर्श के बिना, दया–भाव से स्पर्श करना।
3) क्रूरता से न देखना।
4) रूचि की इच्छा न करना।
5) सुगंध न चाहना।
6) मीठे वचन बोलना।
7) झूठ न बोलना।
8) जीव–हिंसा को किसी तंत्र से रोकना।
9) महान के पधारे हुए स्थान को जाना।
10) जीवोपकार निमित्त साधु के वास स्थानों में, दिव्य पुण्य क्षेत्रों में संचार करना।

11) सत् प्रयत्नों से लेना–देना आदि करना।
12) मित आहार करना।
13) मित भोग करना।
14) मल, जलोपाधियों को क्रम से निकालना।
15) काल भेद से और उश्ण–भद्दापन से बाधा हो तो, औशधियों से, भौतिक साधनों से, चर भेद, हस्त स्पर्श, तंत्र से, मूलांग प्रणव–ध्यान संकल्पों से बाधा का निवारण कर लेना।
16) (मंद बुद्धिवालों को) शुक्ल का अक्रम और अतिक्रम से न निकाल कर बचाना।
17) (तीव्र वालों को) किसी प्रकार भी शुक्ल न निकाल कर बचाना।
18) लगातार केश को कवच से छिपाना।
19) इसी तरह चोटी, छाती आदि अंगों को छिपाना।
20) संचार करते समय टांगों में कवच पहनना।
21) गंदे कपड़े न पहनना आदि इन्द्रिय संयम हो।

करण संयम

1) मन को चित्सभा पर खड़ा करना, अर्थात् पहले भ्रुवों के बीच खड़ा करना।
2) दुर्विशयों से अलग हो।
3) जीव दोश न छुपाना।
4) अपनेपन को छोड़ना।
5) कृत्रिम गुणों से प्राप्य बुराईयों को (रागादि) छोड़कर, प्रकृति का गुणी होना।
6) दूसरों पर क्रोध न करना।
7) अपने शत्रु बने तत्वों को अक्रम मार्ग पर न चलाकर वश में करना आदि करण संयम हैं।

जीव संयम

पुरूश, स्त्री आदि सब लोगों में जाति, समय, मत, आश्रम, सूत्र, गोत्र, कुल, शास्त्र–संबंध, देश मार्ग, उंच–नीच भाव आदि भेद–भाव छोड़कर सबों को अपने आत्मीय लोगों के समान मानना जीव संयम है।

आत्म–संयम

हाथी से लेकर चींटी तक उत्पन्न शरीर वाली जीवात्मा ही तिरूसभा (तिरू + सभा), उसमें स्थित परमात्मा को ही पति, मानकर, सब को त्याग कर, सर्वत्र भेद रहित, सब में आत्मीयता पाना आत्म संयम है।

इसके साथ, एकांत–वास, इच्छा रहित भोगना, जप, तप करना, खुदा की प्रार्थना, जीवदया, श्रेष्ठ गुण का अनुसरण, भजन–पूजन करना, भक्ति करना आदि सदाचारों से चिर काल तक प्रयत्न और अभ्यास करते करते जीना चाहिये।

इस प्रकार के आचरणों से उपरोक्त महोदय पुरूषार्थ पा सकते हैं।

जोति गीत

जोति जोति जोति सुयम
जोति जोति जोति परम
जोति जोति जोति अरूल
जोति जोति जोति शिवम

वामजोति	सोमजोति	वानजोति	ज्ञानजोति
मागजोति	योगजोति	वादजोति	नादजोति
एमजोति	वियोमजोति	एरूजोति	वीरूजोति
एगजोति	एगजोति	एगजोति	एगजोति

आदि नीति वेदने आडल नीडु पादने
वादि ज्ञान बोधने वाल्ग वाल्ग नादने।

(जोति – ज्योति, सुयम – स्वयं, अरूल – कृपा, वाल्ग – जय हो
वियोम – व्योम)

सर्व वल्लभ भगवान को आवेदन

कृपाबडीज्योति (अरुटपेरुञ्जोति) भगवान!

आप कृपा के रूप में हमारे अन्दर और बाहर बैठकर हमारे इस अलङकार (सजावट) दिव्य कार्य में किसी भी रूप में किसी प्रकार की रुकावट न आकर इस अलङकार दिव्य कार्यों को पूरा करने की कृपा करें। हे सर्वशक्ति मय भगवान! हे अलग नेतृत्व रखने वाले भगवान! इस दिव्य कार्य पूरा होते समय आप बैठकर अद्भुत कृपा के स्पष्ट विवरण के माध्य से हमको इस दुनिया में इस शरीर को प्राप्त अन्य लोगो को सत्भक्त बनाकर सच्चा ज्ञान बताकर सच्चे आनंद देकर समरस शुद्ध सन्मार्ग में रखकर सत्य जीवन देकर नित्य के लोग बनाकर जीवन देना चाहिए।

सभी विषयो की कृपाबडी ज्योति अद्भुत भगवान ! इसका आरंभ सभी कालों में शुद्ध सन्मार्ग की मुख्य रुकावटों के रूप में होनेवाले धर्म, मार्ग जैसे आचार संकलप विकलप हमारे मन में न होने के रूप में कृपा करना चाहिए। शुध्द सन्मार्ग के मुख्य लक्ष्य के रूप में होने वाली आत्मनेय एकता को हमारे यहाँ सभी कालो में सभी स्थानो में किसी रूप में किसी प्रकार से अलग न रहकर पूर्ण रूप में रहने की कृपा करें।

सभी होकर अलग नेतृत्व में होनेवाली कृपाबडी ज्योतिमय स्वरूप भगवान, हे देव! आपकी श्री कृपा बडी करुणा को नमस्कार! नमस्कार!

वल्ललार की चरित्र – टिप्पणी

असली नाम	:	इरामलिंगम
विशेष नाम	:	तिरू अरूट प्रकाश वल्ललार
जन्म	:	5-10-1823
जन्म स्थान	:	मरूदूर, कडलूर जिला, तमिलनाडु
माँ–बाप	:	चिन्नम्मै, इरामैया
पुस्तकें लिखीं	:	मनुमुरैकण्डवासगम (1854) और जीवकारूण्य ओलुक्कम (1867)
ज्ञान कविताएँ	:	तिरूवरूटपा (छठवीं ग्रन्थ 6000 गीत)
रचनाओं की स्थापना	:	सन्मार्ग संग (1865)
		सत्य धर्मशाला (1867)
		सिद्धि वलागम (1870)
		सत्य ज्ञान सभै (1872)
रहने का स्थान	:	मरुदूर (1823-1824)
		चेन्नै (1825-1858)
		करूंकुलि (1858-1867)
		वडलूर (1867-1870)
		मेट्टुक्कुप्पम (1870-1874)
सिद्धि	:	30-01-1874, (माघ) तै 19, शुक्रवार रात 12 बजे (मरन नहीं – तीनों देह सिद्धियाँ) जोति

वडलूर रेल गाडी रास्ता

चेन्नै से वृद्धाचलम तक रेल गाडी है। वृद्धाचलम से वडलूर तक बस आर रेल में आ सकते है।

वडलूर में दर्शन करने लायक स्थलों

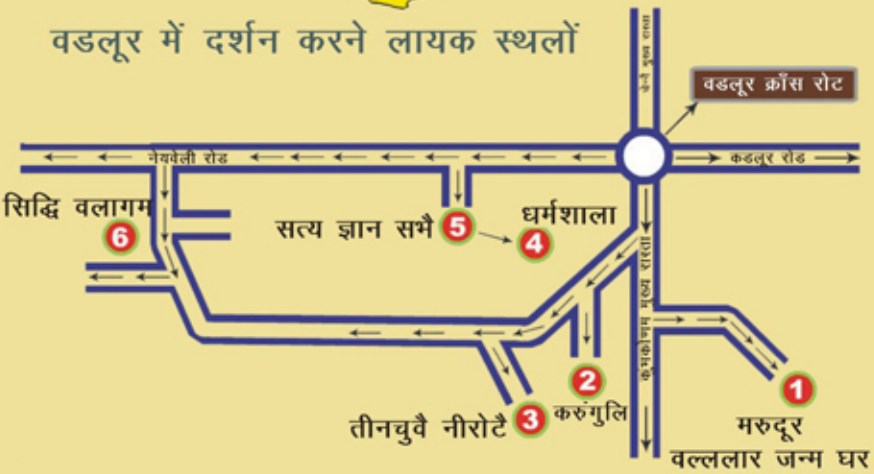

अरुटपेरुञ्जोति अरुटपेरुञ्जोति तनिप्पेरुङ्करुणै अरुटपेरुञ्जोति

सत्य ज्ञानदीपम

सिद्धि वलागत तिरु मालिगै, मेट्टुक्कुप्पम